उपसंहार

उपसंहार

हिंदी के प्रखर समीक्षक और प्रगतिचेता उपन्यासकार डॉ. देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व और कृतित्व के वस्तुपरक आकलन का प्रयास मैंने प्रथम अध्याय में किया है। व्यक्तित्व की पहचान के लिए प्रारंभ में देवेश जी का यथार्थ जीवन-परिचय प्रस्तुत किया है। देवेश जी का समग्र जीवन आर्थिक कठिनाइयों के विरूद्ध संघर्ष करने में बीत गया है। संघर्ष में भी वे दृढ़ और आशावादी रहे हैं। पारिवारिक दायित्व का बोध देवेश जी में है फिर भी परिवार से संबंध विच्छेद करने का उनका निर्णय 'स्व' की रक्षा के प्रयास स्वरूप मानना चाहिए। वे अपने जीवन में जातीयता और सांप्रदायिकता के विरोध में रहे हैं। विवाह तथा संतान को लेकर वे अपने जीवन में पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। उनका व्यक्तित्व संपन्न तथा आदर्श है। वे स्पष्ट, मुखर तथा हँसमुख हैं। उनके व्यक्तित्व के अनुशीलण से हमें जीवन के संघर्ष-पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है। देवेश जी की सफलता का रहस्य उनकी ईमानदारी और परिश्रम है। प्रतिभा की अपेक्षा अभ्यास को आप अधिक महत्त्व देते हैं। जिंदगी के विविध मोड़ों पर संघर्ष के समय उनकी जीजीविषा वृत्ति उन्हें क्रियाशील बनाती रही।

हिंदी में देवेश जी जैसे कम लेखक हुए हैं, जिन्होंने समान रूप से समीक्षा और रचना दोनों का इतनी सार्थकता से निर्वाह कर इतनी सफलता एवं स्वीकृति पाई हो। देवेश जी ने उपन्यास, कहानी, कविता, एकांकी, निबंध, शोध-ग्रंथ आदि सभी रचनाओं में संघर्षवादी तथा आस्थावादी स्वर ध्वनित होता है। उनकी रचनाओं में समाजोन्मुखी, स्वस्थ जीवन दृष्टि प्रकट हुई है। देवेश जी का व्यक्तित्व 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास में प्रतिबिंबित हुआ है। आलोच्य उपन्यासों में प्राध्यापक देवेश जी की आत्मा की आवाज प्रकट हुई है। उनके जीवन संघर्ष का दस्तावेज है।

द्वितीय अध्याय में 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' की कथावस्तु एक वास्तव जीवन एवं यथार्थ चरित्र पर आधारित है। देवेश जी ने अपने अध्यापकीय जीवन की वास्तविक घटनाओं तथा प्रत्यक्ष अनुभूतियों को 'डॉ. शीतांशु जोशी' इस पात्र के माध्यम से चित्रित किया है। अध्यापकों का स्वार्थ, पक्षपात, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, जोड़-तोड़ नीति और खुशामद आदि धांधलियों का सफल चित्रण किया है। 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' का विषय विश्वविद्यालय एवं वहाँ के हिंदी विभाग पर केंद्रित है। इसमें

एक ही घटना है - प्रोफेसर का पद और उसे प्राप्त करने के लिए किए जानेवाले प्रयास। 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' का नायक डॉ. शीतांशु जोशी कॉलेज में प्राध्यापक एवं अध्ययन, अध्यापन, लेखन और शोध-कार्य में रत है। अत: हिंदी जगत में उन्हें सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। राजनीति, कूटनीति, जोड़-तोड़ आदि हरकतों का उनमें अभाव है। वह अपनी स्पष्टवादिता के कारण मुँहफट है किंतु काबिल इन्सान है। उसने अपनी रचनाधर्मिता से सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति देते हुए मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का स्तुत्य प्रयास किया है।

डॉ. ओछेलाल तथा डॉ. बांदोड़कर जैसे अध्ययन विरोधी अध्यापक अपने सपनों एवं अपनी कुर्सी को बनाए रखने के लिए हर एक गुट एवं काली करतुतों का इस्तेमाल करते हैं। बड़ों की सेवा का हर एक तरीका उन्हें मालूम है। वे उपहार के नाम पर रिश्वत देते हैं। जरूरत पड़ने पर लड़की भी सप्लाई करते हैं। अपने कुलपति की जीवनी लिखकर उन्हें भी अपने पक्ष में कर लेते हैं। रूपये लेकर अपने सहयोगियों से शोध-प्रबंध लिखवा लेना तथा डिग्रियाँ देना उनका धंधा है। पुस्तकों की खरीद में कमीशन तथा रिश्वत लेकर पुस्तकों को पाठ्य-क्रम में स्थान देना वे अपना विशेषाधिकार मानते हैं। इस प्रकार शिक्षा जैसा पवित्र क्षेत्र होते हुए भी ऐसी हरकतें खुले आम करने में उनके मन में बिल्कुल ग्लानि नहीं होती। लेखक ने आज के अध्यापक तथा स्वयं को बुद्धिजीवि कहलानेवाले लोगों का नैतिक अध:पतन, बौद्धिक दिवालियेपन, अमानवीय आचरण और क्रुण्ण मानसिकता का चित्रण स्पष्ट रूप से किया है। जिसके कारण कथावस्तु में स्वाभाविकता तथा रोचकता आयी है।

उपन्यासकार ने 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों की कथावस्तु के माध्यम से शिक्षा जैसे राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण प्रश्न को पूरी प्रामाणिकता के साथ उठाया है। साथ ही पाठक का ध्यान उस संकट की ओर खींचा है, जिस पर समय से पहले ध्यान नहीं दिया गया तो समस्त शिक्षा व्यवस्था की गरिमा को कलंकित होने से कोई नहीं बचा सकेगा। यह कथा-व्यथा सिर्फ एक शीतांशु की नहीं है बल्कि हिंदुस्थान के समस्त विश्वविद्यालयों में कार्यरत शीतांशु की है, जिनके हाथ बाह से काट दिए जाते हैं, जो इस जर्जर शिक्षा व्यवस्था को सिर्फ देखते रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। यह राष्ट्रीय बहस का विषय है क्योंकि इस दुर्दशा का हल एक शीतांशु से नहीं हो सकता इसके लिए हजारों शीतांशुओं की

जरूरत है। 'गुरुकुल' के डॉ. शैलेंद्र, परचुरे, थापा और 'शिखर पुरुष' के अरोड़ा, चंद्रा अग्रवाल आदि आदर्शवादी अध्यापकों के कारण कुछ आशा के किरण दिखाई देते हैं।

आलोच्य उपन्यासों में भाषा का सही प्रयोग हुआ है। बोलचाल की हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू की शब्दावली का सहज प्रयोग महानगरीय जीवन की यथार्थता को प्रकट कर देता है। भाषा पात्रानुकूल बन पड़ी है। पात्रों के स्तर के अनुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है। पात्रों के हावभाव, अदाएँ, चाल-ढाल आदि का बड़ी सूक्ष्मता के साथ लेखक ने चित्रण किया है। इनमें जैन, तिवारी, रामजनक, सेवक आदि अध्यापकों का अंदाज, एक्शन्स तथा नीला, सुमन और मिस डी सील्वा की अदाएँ पाठक का ध्यान खींचतो हैं, इसी कारण कथावस्तु में रोचकता आयी है। उपन्यासकार का कवि मन आलोच्य उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है। प्रसंगानुरूप काव्यात्मक भाषा का प्रयोग तथा नए शिल्पगत प्रयोगों के कारण कथावस्तु पढ़ने में दिलचस्पी पैदा होती है। इनके शीर्षक भी व्यंग्यात्मकता को ध्वनित करते हैं। अतः हिंदी राष्ट्रभाषा और उसकी दुर्दशा तथा शिक्षा जैसी ज्वलंत समस्या का केंद्रिय विषय होने के कारण कथावस्तु में मौलिकता दिखाई देती है। कुल मिलाकर 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' जैसी सशक्त और सोद्देश्य रचनात्मक कृतियाँ देने में डॉ. देवेश ठाकुर सफल रहे हैं।

तृतीय अध्याय में विवेच्य उपन्यासों में चित्रित अध्यापक वर्ग के चरित्रांकन को प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास केवल अध्यापक शीतांशु, ओछेलाल, बांदोड़कर एवं अरोड़ा की कथाएँ तथा जैन, तिवारी, यादव, नाहर एवं सोमदत्त की ही उपकथाएँ नहीं हैं। यह सभी अध्यापकों के चरित्र तो प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के सहारे लेखक देवेश ठाकुर जी ने प्रत्येक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद तथा सुख, सुविधा और प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए किए जानेवाले कुकर्नों की तीखी भर्त्सना की है। शोध-छात्र सिद्धार्थ अरोड़ा और विश्वेश्वर थापा युवा आक्रोश के प्रतीक हैं। तो शोध-छात्रा सुमन अहलुवालिया, नीला सबनीस और डी सील्वा आधुनिक भोगवादी संस्कृति के प्रतीक हैं। अतः ये चरित्र वैयक्तिक न होकर प्रतिनिधि तथा सार्वजनिक हो गए हैं। विवेच्य उपन्यासों में पात्रें के चरित्र को देखने से पता चलता है कि इनके अधिक पात्रों को लेकर उपन्यास में उनकी भूमिका तथा चरित्रांकन का सफल निर्वाह करना दूस्तर कार्य था, किंतु लेखक ने इस दूस्तर कार्य को अंजाम देने में सफलता पाई है। पात्र योजना की सफलता इस बात में होती है कि हर पात्र चरित्र बनकर कथा में अपनी

उपस्थिति प्रमाणित करें। विवेच्य उपन्यास में जहाँ तक एक और अपनी जीजिविषा से प्रमाणित करनेवाले अध्यानक चरित्र डॉ. शीतांशु, डॉ. ओछेलाल और डॉ. बांदोड़कर, डॉ. जैन, डॉ. तिवारी, डॉ. रामजनक, डॉ. गंगाप्रसाद और डॉ. अरोड़ा आदि हैं। ऐसे सूच्य चरित्रों को भी बड़ी कलात्मकता से नियोजित किया नया है। जो उपस्थिति का एहसास कराते हुए जीजिविषा एवं संघर्ष को गति प्रदान करते हैं।

डॉ. शीतांशु अपनी सोच, समझ और आत्मनिर्णय लेने की क्षमता से लेखन, अध्यापन तथा साहित्यिकता को प्राथमिकता देते हैं। और इसी महत्त्वाकांक्षा को बनाए रखने के लिए आगे कुछ तरीके अपनाना चाहते हैं। डॉ. ओछेलाल तथा डॉ. बांदोड़कर इसी व्यक्ति को अपना वास्तविक प्रतिद्वंद्वी मानते हैं। अत: अपने सरगना के साथियों की साँठगाँठ बनाकर ठीक योजना बनाकर डॉ. शीतांशु की उपेक्षा करते हैं तथा अपने मायाजाल में फँसाकर निरस्त कर देते हैं। अत: डॉ. शीतांशु की महत्त्वाकांक्षा और सपने यथार्थ की कठोर चट्टानों से टकराकर चूर-चूर हो जाते हैं। परंतु उपेक्षा शीतांशु को मार नहीं सकती। वे अपनी लेखनी से इन शिक्षा विरोधी शिखर पुरुषों की असंगतियों, विद्रूपताओं, अनैतिकता, अत्याचार, शोषण, आतंक, अराजकता, पाखंड़ी, स्वार्थी भावनाओं, आत्मविरोधों एवं भ्रष्ट प्रवृत्तियों पर कड़ा प्रहार करके उनका पर्दाफाश करते हैं। फलत: डॉ. शीतांशु जैसे अध्यापक के चरित्रांकन से हमें यह बोध मिलता है कि आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव मुक्ति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम होता है। उसी प्रकार उनका चरित्र आज के नव अध्यापकों को नई जीवन दृष्टि प्रदान करने में सफल हुआ है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत आलोच्य उपन्यासों में चित्रित अध्यापक और शिक्षा जगत की समस्याओं को उजागर किया है। आज की शिक्षा व्यवस्था में विशेषकर विश्वविद्यालयीन शिक्षा व्यवस्था में पनपती हुई अध्यापकों की समस्याओं को 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' के माध्यम से उपन्यासकार देवेश ठाकुर ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। उनके हर एक उपन्यास अध्यापकों या उनकी समस्याओं पर आधारित है। 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों में अध्यापक वर्ग और उनमें चल रही धांधलियों का यथार्थ चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यासों में परीक्षाएँ, शोधकार्य, नौकरी, अनैतिकता और राजनीति आदि समस्याओं को दिखाया है जो लेखक की अनुभूति पर आधारित हैं। अत: यथार्थ लगती हैं।

विवेच्य उपन्यास में शोध-कार्य की समस्या का विस्तार से विवेचन किया गया है। अपने स्वार्थ के लिए कुछ अध्यापकों ने पीएच्. डी. तथा डी. लिट. जैसी उपाधियों का बाजार बना दिया है। जिसके लिए रिसर्च स्कॉलरों का आर्थिक तथा शारीरिक शोषण किया जाता है। अनुसंधान करनेवाला पुरुष हो तो उससे श्रम और रूपए ऐंठ लिए जाते हैं और यदि वह स्त्री हो तो उसके सौंदर्य तथा शरीर का नाजायज लाभ उठाया जाता है। मगर अब इसका विरोध भी शुरू हो गया है। समवेत न सही एकाकी ही सही। युवापीढ़ी का प्रतीक थापा इस व्यवस्था के शोषण और अन्याय से पीड़ित होकर, दलाल मास्टर ओछेलाल की टाँगे तोड़ देता है।

शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में नंगई, लुच्चई, पक्षपात से युक्त तथा स्वार्थ भरी दृष्टि आदि के साथ अनैतिक समस्या भी बड़े पैमाने पर प्रविष्ट होने के कारण संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का पतन हो रहा है। 'गुरुकुल' उपन्यास में तो अनैतिकता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची हुई दिखाई देती है जो शारीरिक धरातल पर पहुँच जाता है। इसके लिए अध्यापक और उनकी छात्राओं को कोई शर्म तथा ग्लानि महसूस नहीं होती। डॉ. ओछेलाल और उनकी छात्रा सुमन अहलुवालिया, डॉ. जैन और उनकी छात्रा तथा प्रमिका मिस्रेज नीला सबनीस, प्रा. तिवारी और उनकी गुजराती छात्रा के शारीरिक संबंधों को दिखाकर उपन्यासकार ने आधुनिक गुरुकुलों की पोल खोल दी है। हमारे देश में शिक्षा की उन्नति के मार्ग में अटका बहुत बड़ा पहाड़ है, उसमें राजनीति का प्रवेश। राजनीतिक प्रभाव के कारण करने योग्य बातें पीछे रह जाती हैं और न करने योग्य सामने आ जाती हैं। शिक्षामंत्री, मुख्यमंत्री से लेकर केंद्रिय मंत्रियों के माफियों ने शिक्षा व्यवस्था को अपने काबू में लिया है। ये लोग रिश्वत लेकर अध्ययन विरोधी अध्यापकों को अध्यक्ष, प्रोफेसर और कुलपति बनाते हैं तथा उनके अवकाश ग्रहण की अवधि बढ़ाकर फिर से ऊँचे पदों पर आसीन कराते हैं। परिणाम स्वरूप डॉ. शीतांशु, डॉ. परचुरे, डॉ. अरोड़ा जैसे ईमानदार, नैतिक, रचनाधर्मी, अध्ययनशील अध्यापक इसमें पिसे जाते हैं, उपेक्षित रह जाते हैं।

शिक्षा व्यवस्था में रत विविध समस्याओं के साथ-साथ अध्यापकों में व्याप्त घटियापन, गुटबंदी, साँठगाँठ, भ्रष्टाचार आदि को तिलांजली देनी चाहिए। नहीं तो संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था और अध्यापक वर्ग भ्रमित और दिशा-ज्ञान रहित हो जाएगा। ऐसा न होने पर उसके अपने लिए तो विनाश का द्वार खुला ही है, वह देश, राष्ट्र, मानवता और शिक्षा-व्यवस्था के लिए भी विनाश का द्वार खोलनेवाला

प्रमाणित हो सकता है। सभी प्रकार के पहलुओं को सामने रखकर यह स्पष्ट किया है कि आज के जागरूक शिक्षाविशेषज्ञों, राजनीतिज्ञों, संस्थाचालकों, पूर्व अध्यापकों को इस बात का निर्णय करना है कि शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्ट प्रवृत्ति, हीन राजनीति, अनैतिकता, लोभ और धोखेबाजी उनके लिए कहाँ तक लाभदायक या हानिकारक सिद्ध हो सकती है। उपन्यासकार देवेश ठाकुर को शिक्षा क्षेत्र के अध्यापक एवं उनके समुख उपस्थित समस्याओं के विविध पहलुओं को उजागर करने में सफलता मिली है। उन्होंने अध्ययन विरोधी, भ्रष्ट, अवसरवादी, स्वार्थी अध्यापकों के साथ अध्ययनशील आदर्श अध्यापकों को चित्रित कर शिक्षा क्षेत्र को बरबाद होने से बचाने की कोशिश करनेवाले देश-प्रेमी लोगों को सजग-सचेत किया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत अध्यापक वर्ग की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। उपन्यासकार ने अध्यापक वर्ग की वर्गीय स्थिति और परिवेश तथा अध्यापकीय मानसिकता का निरूपण सफल ढंग से किया है। किसी पात्र की विशेषताओं का सही मूल्यांकन करना हो तो उसके परिवेश को जानना आवश्यक होता है। परिवेश के विस्तृत क्षेत्र पर पात्रों के विविध रूप अपनी भूमिका की सार्थकता प्रमाणित करते हैं। परिवेश से उसकी मानसिकता, अध्ययनशीलता, प्रगतिशीलता, आत्मकेंद्रित वृत्ति, अध्ययन विरोधी भावना और मन की कुंठाएँ आदि का पता चलता है।

'गुरुकुल' के डॉ. शीतांशु, डॉ. शैलेंद्र, डॉ. परचुरे, डॉ. गुंजीकर, प्रा. कालिंदी तो 'शिखर पुरुष' के प्रा. अरोड़ा, प्रो. त्रिपाठी, डॉ. नक्षत्रा आदि की विशेषताओं का चित्रण आदर्शवादी, अध्ययनशील तथा प्रगतिशील अध्यापक के रूप में हुआ है। ये सभी अध्यापक मध्यवर्गीय, अच्छे परिवेश के हैं तथा अपने पेशे के प्रति ईमानदार दिखाई देते हैं। साथ ही 'गुरुकुल' के डॉ. ओछेलाल, डॉ. तिवारी, डॉ. जैन, डॉ. कृष्णकांत, डॉ. कौशिक, डॉ. नाहर तथा 'शिखर पुरुष' के डॉ. बांदोडकर, डॉ. यादव, डॉ. गंगाप्रसाद, प्रा. जंग बहादुर, प्रा. नगाइच आदि अध्यापकों का परिवेश मध्य तथा निम्न मध्यवर्ग रहा है। ये अध्यापक अवसरवादी, आत्मकेंद्रित अध्ययन विरोधी हैं तथा अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार नहीं हैं। इन अध्यापकों में भ्रष्टचार, जोड़-तोड़ की नीति, अखाड़ेबाजी, शिक्षा के प्रति अनादर, गुंड़ागर्दी, अपनी छात्राओं तथा सहअध्यापिकाओं के प्रति वासना से भरा प्यार, गंदगी, अनैतिकता और अध्ययन अध्यापन

के बजाय अन्य व्यवसाय में रत आदि विशेषताओं का तथा मानसिकता का चित्रण उपन्यासकार ने अनूठे ढंग से किया है।

हर व्यक्ति के अपने संस्कार और अपना परिवेश होता है। उसका अपना एक वर्ग भी होता है। अलग-अलग वर्ग और अलग-अलग संस्कारों में पलने-बढ़ने से अध्यापक वर्ग की मानसिकता कुछ अलग किस्म की हो जाती है। अत: परिवेश से मानसिकता बनती है। मानसिकता के परिणाम स्वरूप अध्यापकों का रहन-सहन जीवन पद्धति बनती है। उससे उनकी सत-असत प्रवृत्ति प्रकट होती है। देवेश ठाकुर ने आदर्शवादी, अध्ययनशील अध्यापकों की आदर्शवादिता उत्कृष्ट ढंग से प्रकट की है और उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उसका भी यथार्थ चित्रण किया है। इसी के साथ 'जय बोलो बेईमान की' के नारे को अपना जीवन का अंग माननेवाले आत्मकेंद्रित, स्वार्थी, अध्ययन विरोधी, अवसरवादी, भ्रष्टाचारी अध्यापकों की पोल खोलकर उनकी शल्य चिकित्सा एक कुशल सर्जन के तौर पर की है। इस प्रकार उपन्यासकार शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत शिखरपुरुषों की विशेषताओं को उजागर करने में सफल हुए हैं और गुरुकुलों को ऐसे शिखर पुरुषों द्वारा बचाने का संदेश देते हैं।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

इस लघु शोध-प्रबंध की मुख्य उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं -

1. हर रचनाकार के व्यक्तित्व का तथा परिवेश का परिणाम उसकी कृतियों में अवश्य दिखाई देता है। देवेश ठाकुर जी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी कृतियों पर स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हुआ है। उनके 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास में प्रस्तुत डॉ. शीतांशु का चरित्र पढ़कर यह संभ्रम होता है कि क्या वे स्वयं उपन्यासकार ही तो नहीं हैं ? रचनाकार और प्रमुख चरित्र का व्यक्तित्व इंतना एक दूसरे से मेल खाता हुआ दिखाई देता है।
2. उपन्यासकार ने अध्यापक तथा स्वयं को बुद्धिजीवि कहलानेवाले लोगों का नैतिक अध:पतन, बौद्धिक दिवालियापन, अमानवीय आचरण और ऋग्ण मानसिकता का चित्रण करके सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हुए मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का स्तुत्य प्रयास किया है। साथ ही पाठक का ध्यान उस संकट की ओर खींचा है, जिस पर समय से पहले ध्यान नहीं दिया गया तो समस्त शिक्षा व्यवस्था की गरिमा को कलंकित होने से कोई नहीं बचा सकेगा।

3. विवेच्य उपन्यासों में अध्यापक वर्ग की वर्गीय स्थिति, परिवेश एवं उनकी मानसिकता के अनुरूप आदर्शवादी, अध्ययनशील, प्रगतिशील विचारोंवाले, आत्मकेंद्रित, अवसरवादी तथा अध्ययन विरोधी अध्यापकों की विशेषताओं को प्रकट किया है।

4. विवेच्य उपन्यासों में प्राध्यापक देवेश ठाकुर की आत्मा की आवाज है। उनके अध्यापक जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। यह चरित्र वैयक्तिक न होकर प्रतिनिधिक तथा सार्वजनिक हो गया है। साथ ही वह पद और प्रतिष्ठा को ठुकराकर आत्मीक शांति को महत्त्व देनेवाला चरित्र है। फलतः डॉ. शीतांशु जैसे अध्यापकों के चरित्रांकन द्वारा हमें यह बोध मिलता है कि आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव मुक्ति की दिशा में उठा हुआ महत्त्वपूर्ण कदम होता है। ऐसे अध्यापकों का चरित्र आज की नई पीढ़ी के अध्यापकों को नई जीवन दृष्टि प्रदान कर सकता है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

देवेश ठाकुर जी के 'गुरुकुल'और 'शिखर पुरुष' उपन्यासों पर निम्नांकित दृष्टि से भी अध्ययन हो सकता है -

1. यथार्थवादी उपन्यास और 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' का अनुशीलन।
2. 'गुरुकुल' तथा 'शिखर पुरुष' के अध्यापकों का मनोवैज्ञानिक चित्रण।